प्रीति सेठ

अगर आपके आस-पास भी सफलता की ऐसी ही अनूठी कहानी है, तो फोटो सहित हमें लिख भेजें

निःशब्द दुनिया की आवाज

कहते हैं, अज्ञानता सबसे बड़ा दुश्मन है। हमारे समाज में मूक-बधिरों के साथ भी ऐसा ही होता है। पर, उत्तर प्रदेश के नोएडा में एक महिला ऐसे लोगों को मुख्य धारा से जोड़ने की कोशिश में लगी हैं

जीवन में कुछ अलग करने की चाह बहुत से लोगों में होती है, लेकिन रास्ते में आने वाली कठिनाइयों का सामना करते हुए मंजिल तक पहुंचना सबके लिए संभव नहीं होता। रूमा रोका ने अथक मेहनत और लगन से ऐसा ही कुछ किया। रूमा हमेशा से कुछ अलग करना चाहती थीं। कुछ ऐसा, जिससे समाज के जरूरतमंद लोगों को मदद मिल सके। एक दिन दूरदर्शन पर हाथ के इशारों से समाचार पढ़ते समाचार वाचक को देखकर उन्हें खयाल आया कि ऐसे मूक-बधिरों की संख्या भी कम नहीं होगी, तभी तो नेशनल चैनल पर इनके लिए कार्यक्रम आ रहा है। बस वहीं से उन्हें प्रेरणा मिल गई। रूमा बताती हैं, 'केवल दो महीने में मैंने मूक-बधिरों के बारे में पूरी जानकारी इकट्ठा की और साइन लैंग्वेज सीखी। सबसे खास बात यह है कि ये लोग हमारी तरह ही सामान्य इंसान हैं, लेकिन बस एक कमी के कारण उपेक्षित और अपाहिज की जिंदगी जी रहे होते हैं। पैदा होने के दो-तीन साल तक तो इनकी सुनने-बोलने की क्षमता का पता ही नहीं चलता। और जब पता चलता है, तो कई साल इस कोशिश में निकल जाते हैं कि शायद बच्चा बोलने और सुनने लगे। कहते हैं न कि अज्ञानता ही सबसे बड़ा दुश्मन है और यही मूक-बधिरों के साथ भी होता है।'

रूमा ने अपनी कोशिशों की शुरुआत नोएडा के एक छोटे से फ्लैट में 13 जून, 2005 को नोएडा डेफ सोसायटी की नींव रखकर की। उन्होंने कम-से-कम दसवीं कर चुके लोगों के लिए बेहतर भविष्य की कई योजनाएं बनाईं। शुरुआत में उनके पास केवल पांच स्टूडेंट थे और ट्रेनर के रूप में वो अकेली। रूमा बताती हैं, 'लोग मेरी कोशिश को सराहते कम थे, मुझे हतोत्साहित ज्यादा करते थे। लेकिन मैंने कभी हार नहीं मानी और अपनी कोशिशें जारी रखीं। मूक-बधिरों को प्रशिक्षण देने के लिए सबसे जरूरी है उनकी भावनात्मक जरूरतों को समझना, उनकी योग्यताओं को पहचानना और उन्हें सही प्रशिक्षण देना। ताकि प्रशिक्षण आदि के बाद वो समाज की मुख्य धारा में शामिल हो सकें। अचानक कोई जादू नहीं होता। मात्र पांच साल के समय में मेरे पास पांच से तीन सौ स्टूडेंट हो गए। अब प्रशिक्षकों की संख्या भी पंद्रह हो गई। बच्चों को ट्रेनिंग देने के दौरान मुझे उनमें जो योग्यता नजर आती है, मैं उसे चुन कर बच्चों को उसी क्षेत्र में आगे बढ़ने में मदद करती हूं। सभी प्रशिक्षक ऐसे ही लोग हैं, जो कभी मेरे पास सीखने आते थे। शुरू में लड़कियों की संख्या कम थी, पर अब 50 से 55 लड़कियां सीखने आती हैं। ये लोग लीला होटल, कोस्टा कॉफी, एनएनआईटी जैसी प्रतिष्ठित जगहों पर काम कर रहे हैं। बारिस्ता, कॉफी कैफे डे तथा आईटीसी जैसी बड़ी कंपनियों में काम कर ये लोग अपने पूरे वर्ग को प्रोत्साहित कर रहे हैं। उम्मीद है कि आने वाले वक्त में और बच्चों को भी बेहतर कल दे पाऊंगी।